Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 1 pp. 79-94, 2006
DOI: 10.51220/hjssh.v1i1.12

बारह सैयद क्षेत्र के प्रमुख पुरा स्मारक १५७०ई० से १६७०ई०

आबिद जैदी
इतिहास विभाग मेरठ कालेज, मेरठ

समय के साथ सब कुछ बदलता चला जाता है। राजा, महाराजा, नावाब और ज़मीदार सभी समय के साथ इतिहास के पन्नों में समा जाते हैं यदि कुछ रह जाता है तो इनके स्मृति चिन्ह। इन स्मृति चिन्हों के स्मारकों के स्थान सबसे महत्त्वपूर्ण है। इन स्मारकों में धार्मिक स्थल जैसे मन्दिर, मस्जिद के अतिरिक्त मकबरों एवं छत्रियों का विशेष स्थान होता है। प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर में विद्यमान कुछ ऐतिहासिक पुरा स्मारकों पर प्रकाश डालने का एक लघु प्रयास है।

मुजफ्फरनगर उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग का एक महत्त्वपूर्ण जिला है जो राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 58 पर दिल्ली से लगभग 125 किलोमीटर की दूरी पर है तथा आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक सम्पन्न है। यह गंगा यमुना के दोआब में स्थित है[1]। गंगा नदी इसकी पूर्वी सीमा निर्धारित करती है, जबकि यमुना नदी इसकी पश्चिमी सीमा बनाती है। इस जिले की उत्तरी सीमा पर उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल के दो जिले क्रमशः सहारनपुर एवं हरिद्वार स्थित हैं, जबकि उत्तर प्रदेश के मेरठ और बागपत दोनों जिले इसकी दक्षिण सीमा पर हैं।

मुजफ्फरनगर जिला मुख्यालय अक्षांश 29^0 11' 30' उत्तर तथा देशान्तर 77^0 3' 45'' पूर्व पर स्थित है[2]। मुगल सम्राट जहांगीर के शासनकाल तक मुजफ्फरनगर नामक बस्ती अपने अस्तित्व में नही आई थी। उस समय सरवट तक महत्त्वपूर्ण स्थान था। मुजफ्फरनगर को मुगल शासक शाहजहाँ के शासनकाल में 1633 ई0 में सैयद अबुल मुजफ्फर खाँ के पुत्र ने अपने पिता के नाम पर आबाद किया था[3]। वास्तव में नवस्थापित यह कस्बा सरवट के बिलकुल सटा हुआ बसाया गया था। कालान्तर में सरवट का नाम गौण हो गया और मुजफ्फरनगर का नाम प्रसिद्ध हो गया। 1826 ई0 में ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने मुजफ्फरनगर की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए इसे जिला मुख्यालय बनाया[4]। इस निर्णय से यह स्थान और भी महत्त्वपूर्ण हो गया।

जिला मुजफ्फरनगर के इतिहास में एक वंश का अद्वितीय स्थान है। यह वंश है बारहा सैयद वंश। बारहा सैयद वंश के पूर्वज अबुल, फराह वास्ती ईरान के वासित शहर निवासी थे[5]। यह अपने बारह पुत्रों के साथ भारत आये[6]। कुछ समय पश्चात् यह अपने आठ पुत्रों के साथ वापस चले गये तथा शेष चार पुत्र पंजाब में पटियाला के निकट के क्षेत्रों में बस गये थे[7]। सल्तनत काल के दौरान ''पंजाबी सैयद'' कहे जाने वाले अबुल फ़राहवास्ती के वंशज मेरठ और सहारनपुर के बीच ऊपरी गंगा-यमुना

©SHARAD

के दोआब मे आकर बस गये थे। एक परम्परा के अनुसार यह लोग इस इलाके के 12 गांवों में बस जाने के कारण ''बारहा सैयद'' कहलाये[8]।

जिले की दो तहसीलो क्रमशः जानसठ एवं मुजफ्फरनगर में बारहा सैयदों की स्थिति पर्याप्त प्रभावकारी रही है। यह तथ्य उल्लेखनीय है कि ''बारहा सैयद'' प्रायः सम्पूर्ण मुगलकाल मे उत्कृष्ट योद्धा माने जाते थे। भारत के सैन्य इतिहास में बारहा सैयदों का पहला महत्वपूर्ण विवरण आइने अकबरी में मिलता है[9]।

अकबर ने सैयद महमूद एवं दूसरे बारहा सैयदों को ऊँचे मनसब प्रदान किये[10]। सम्पूर्ण मुगलकाल में ''बारह सैयदों'' के विभिन्न व्यक्तियों ने सैन्य ख्याति अर्जित की तथा ऊंचे-ऊंचे पद प्राप्त किये। बिहार, बंगाल, मालवा आदि महत्वपूर्ण सूबों में उन्होंने बड़ी प्रशासनिक जिम्मेदारियों का निवर्हन किया।

यह महत्वपूर्ण है कि अधिकांशतः बारहा सैयद अपने परिवार को अपने साथ नहीं रखते था, उनके परिवार इसी ''सादात-ए-बारहा'' क्षेत्र में रहते थे। सम्भवतः यह उनकी नीति का अंग था, तथा परिवार को सुरक्षित रखने के लिए वह ऐसा करते थे। बारह सैयदों ने यहां पर बहुत अधिक संख्या में इमारतों का निर्माण कराया इसी कारण इस इलाके मे पुरातात्विक इमारतों की एक बड़ी संख्या विद्यमान है।

प्रस्तुत शोध पत्र में इस क्षेत्र के कुछ महत्त्वपूर्ण पुरास्मारकों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। यद्यपि निरन्तर उपेक्षा और उचित संरक्षण के अभाव केकारण इन ऐतिहासकि इमारतों के अस्तित्व पर खतरा मंडरा रहा है, तथापि यदि अभी इस ओर थोड़ा ध्यान दिया जाये तो यह महत्वपूर्ण स्मारक अपने मूल स्वरूप में सरक्षित रखे जा सकते हैं। इनमें से प्रमुख स्मारकों का सचित्र विवरण निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है।

पुरा स्मारक

(१) सैयद महमूद का मक़बराः-

यह एक सुन्दर ऐतिहासिक स्मारक है जो कि मुजफ्फरनगर जिले की जानसठ तहसील के अन्तर्गत जिला मुख्यालय से 17 किमी दूर ग्राम ''मुझेड़ा'' में स्थित है। राजस्व रिकार्ड में यह मकबरा माखनपुर में स्थित है। सैयद महमूद बारहा सैयद वंश के ऐसे प्रथम व्यक्ति थे जो कि मुगल शासन में बड़े मनसब पर नियुक्त थे[11]। वास्तव में सम्राट अकबर ने उन्हें उनकी वीरता से प्रभावित होकर लाभान्वित किया था।

मानकोट के घेरे के समय वे सिकन्दर सूर की सेना में उच्च अधिकारी थे और सिकन्दर सूर का पक्ष त्यागकर वह बैरम खां की सेना में जाकर मिल गया थे[12]। वह बैरम खाँ के मित्र थे। बैरम खाँ ने सैयद महमूद को खाने जमान के नेतृत्व में हेमू के विरूद्ध अभियान में भेजा[13]। तत्पश्चात् उन्हें शेर खाँ सूर के गुलाम हाजी खाँ सूर के विरूद्ध भेजा गया[14]। जिसने अजमेर तथा नागौर पर कब्जा कर लिया था[15]। 1558ई0 में सैयद महमूद पुनः सैनिक अभियान पर भेजे गये, यह अभियान हाथकंठ के भदौरियों के विरूद्ध था[16]। इसमें उन्हें आधम खाँ के साथ भेजा गया था। इन अभियानों ने सैयद महमूद की सैन्य प्रतिभा को उजागर किया।

जौधपुर में जयतरण के किले की मुहिम में भी वह साथ थे[17]। जब अकबर और बैरम खाँ के आपसी सम्बन्ध खराब हो गये तब वह सम्राट के सीधे सम्पर्क में आ गये। अकबर ने उन्हें दिल्ली के निकट जागीर प्रदान की[18]। इतिहासकारों का मत है कि जब अकबर ने शासन की बागडौर स्वयं अपने हाथों में ली तो वह पुराने अमीरों के प्रभाव को कम करना चाहता था। और इसी कारण वह राजपूतों एवं भारतीय मुसलमानों को प्रोत्साहन देता दिखायी पड़ता है अकबर ने जिन भारतीय मुसलमानों को आगे बढ़ाया उनमें तीन वंश प्रमुख रूप से गिनाय जा सकते है- (1.) शेख मुबारक का वंश, (2.) शेख सलीम चिश्ती का वशं और (3) सैयद बारहा वंश। किन्तु उपर्युक्त दोनों वंशों में उतनी बड़ी संख्या में मनसबदार नहीं थे जितने कि बारहा सैयदों में थे[19]। सैयद महमूद एक उत्कृष्ट योद्धा की छवि प्राप्त कर चुके थे। उन्हें इब्राहीम हुसैन निर्मा के विरूद्ध गुजरात अभियान में भेजा गया[20]। वह सारनाल में सम्राट अकबर से जा मिले, भीषण युद्ध हुआ जिसमें इब्राहीम की पराजय हुई[21] तथा वह भागने के लिए विवश हुआ। तत्पश्चात् वे मुहम्मद हुसैन मिर्जा के विरूद्ध अभियान पर गये। इस युद्ध में बारहा सैयदों पर मुगल सेना के मध्यभाग की कमान थी, यह युद्ध मध्यभाग की सेना की वीरता ओर रणनीति के कारण जीता जा सका था। विजय का श्रेय बारह सैयदों को प्राप्त हुआ और सम्राट उनकी व्यक्तिगत वीरता के उदाहरण से अत्यन्त प्रभावित हुआ। इसी वर्ष सैयद महमूद ने अन्य बारहा के सैयदों तथा सैयद मुहम्मद अमरोहा के साथ राजा मधुकर के विरूद्ध अभियान में हिस्सा लिया[23]। राजा मधुकर के क्षेत्र पर अधिकार कर लिया गया। सैयद महमूद की 1572-73ई0 (980 हिजरी) में मृत्यु हो गयी। मृत्यु के समय वह दो हजारी मनसबदार के उच्च पद पर नियुक्त थे[24]।

सैयद महमूद के सुन्दर मकबरे के ठीक सामने उनके पिता सैयद माखन का मकबरा स्थित हैं दोनों मकबरों के मध्य एक समतल मैदान है, जिसमें एक बड़ा कुआँ तथा कुछ पुराने पेड़ खड़े हैं। सैयद महमूद का मकबरा गुम्बद विहीन है। इसका प्रवेश द्वार 7 फुट ऊँचा है। जिसकी चोड़ाई 5 फुॅट है वस्तुतः प्रवेश द्वार चाहरदीवारी की पश्चिमी भुजा के टीक मध्य में है। यह एक वर्गाकार रचना है, जिसकी प्रत्येक भुजा की माप 183 फुट है। प्रवेश द्वार के अन्दर जाने पर ठीक मध्य में एक चबूतरा है जो भूमि से 3 फुट ऊंचा है यह आयताकार है। जिसकी भुजाओं की माप 60 फुट एवं 54 फुट

है। प्रवेश द्वार के ठीक सामने चबूतरे की लम्बाई 60 फुट है। इसी बीच से थोडा दाहिने ओर एक अभिलेख है जिसकी भाषा अरबी है[25]। मकबरे की बनावट आकर्षक है जिसमें सही अनुपात का पालन किया गया है। इसमें दोनों कोनों पर क्रमशः दो गुम्बदनुमा मीनारे हैं बीचों-बीच पुनः एक बड़ा दरवाजा विशेष आकृति में बनाया है। जिसमें दोनों ओर ऊपर नीचे दो-दो आल्हे बनाये गये है मकबरे की ऊंचाई 15 फुट 5 इंच तथा चौड़ाई 18 फुट है कोने वाली बुर्जियां संलग्न दीवारों से 6 फुट अधिक ऊंची है बुर्जियां ठोस है ऊंचाई वाली सम्पूर्ण निर्मिति मे खंगर पत्थर प्रयुक्त है जबकि चबूतरे में सफेद संगमरमर को प्रयोग किया गया है। मकबरे के पास चूबूतरे के सफेद संगमरमर के स्थान पर लाल बलुआ पत्थर प्रयुक्त है। शेष चबूतरा संगमरमर से बना है। चबूतरे में प्राय बीच में सैयद महमूद की कब्र है। इसी के साथ 2 कब्रे और भी है। इस स्मारक में कुल दस छोटे-बडे आल्हे हैं। समस्त चाहरदीवारी में प्रमुखतया खंगर पत्थर लगा है। मुख्य प्रवेश द्वार में सुन्दरता की दृष्टि से लाल बलुआ पत्थर (Red Send Stone) भी लगाया गया है। मकबरे में कहीं भी ज्यामीतिय अंकन नहीं है। इसकी सादगी प्रभावोत्पादक है।

पुरा स्मारक

(२) सैयद हाशिम का मकबरा

सैयद महमूद के पुत्र सैयद हाशिम बारहा अपनी वीरता और सैन्य कुशलता मे अपने पिता के समान थे। इन्होंने अपने पिता के जीवन काल में ही पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। उनको अकबर कालीन गुजरात अभियान में खाने कलाँ के साथ भेजा गया था। जहाँ ये अपने पिता सैयद महमूद के नेतृतव में सैयद अहमद तथा सैयद कासिम आदि के साथ लड़े थे। गुजरात अभियान में जीत के पश्चात् सैयद महमूद अकबर के साथ वापस आ गये थे। किन्तु शेष बारहा सैयदों को गुजरात में ही रहने के निर्देश थे[27]। 1575 ई0 में सैयद अहमद एवं सैयद हाशिम को बारहा सैयदों की टुकड़ी के साथ जोधपुर के शासक मालदेव के पुत्र चन्द्रसेन के विरूद्ध भेजा गया[28]। चन्द्रसेन ने सिवाना किले को सुदृढ़ कर लिया था। बारहा सैयदों ने किले का घेरा डाले रखा और शत्रु को भारी हानि पहुंचाई किन्तु किले पर कब्जा 1576 ई0 में शाहबाज खाँ काम्बोह के नेतृत्व में किया जा सका[29]। 1767 ई0 में इतिहास प्रसिद्ध हल्दी घाटी की लड़ाई हुई जिसमें सैयद हाशिम को मानसिंह मेवाड़ के राणा प्रताप के विरूद्ध अभियान में भेजा गया था। राजा मानसिंह के साथ बारहा सैयदों के 80 योद्धा थे। हल्दी घाटी के युद्ध में सैयद हाशिम के नेतृत्व में बारहा सैयदों की सेना को मध्य भाग की जिम्मेदारी मिली थी जबकि सैयद अहमद दाहिनी ओर का नेतृत्व कर रहे थे भयंकर युद्ध हुआ। बदायुंनी लिखता है-

यदि सैदय अपने स्थान पर दृढ़ता से नहीं जमे रहते तो यह जीत लज्जाजनक हार में बदल जाती है[30]।

1584 ई0 तक सैयद हाशिम एवं उनके भाई सैयद कासिम अजमेर में शाही सेना में सेवारत थे। उन्हें अजमेर में जागीरें भी दी गयी थी[31]। इन्हें 1584 ई0 में अब्दुर्रहमीन खानखाना के नेतृत्व में मुजफ्फर गुजराती के विद्रोह को दबाने के लिए भेजा गया। शाही सेना का मध्य भाग बारहा सैयदों के कमान में था। सरखेज के युद्ध में लड़ते हुए सैयद हाशिम मारे गये[32]।

सैयद हाशिम ने अपने जीवन में पर्याप्त ख्याति प्राप्त की थी। कहा जाता है कि युद्ध के दौरान एक दिन रात में उन्होंने उन्होंने यह स्वप्न देखा कि 18 बर्छियां उनके शरीर को चीरकर निकल गयीं थी और शरीर से बहुत ज्यादा खून बह रहा था। उन्होंने यह सपना अपने निकट सम्बन्धियों को बताया। कहते हैं कि अगले दिन युद्ध में उन्हें इतने घाव लगे कि अत्यधिक खून बह जाने से उनकी मृत्यु हो गयी। जब उनका शरीर लाया गया तो उस पर 18 घाव ही थे[33]।

इनका मकबरा हाशिमपुर गांव में जो तहसील जानसठ, जला मुजफ्फरनगर से लगभग 34 किमी की दूरी पर बिजनौर जाने वाले मार्ग पर स्थित है यह मुख्य सड़क मार्ग से लगभग 3 किमी हटकर जंगल में स्थित है।

यह एक अष्टकोणीय आकृति पर आधृत गुम्बद शिखर वाला मकबरा है। यह जमीन से 2 फुट ऊंचे प्लेटफार्म पर बना है। इसमें चारों ओर आठ दरवाजे हैं। आठों भुजाओं की माप 17 फुट है। दीवारों की मोटाई 5 फुट 6 इंच है। मकबरे की गुम्बद की प्लेटफार्म से ऊँचाई 48 फुट है। इसमें ज्यामितिया अंकन अथवा रंगों के प्रयोग का कोई साक्ष्य नहीं हैं मकबरा लखनौरी ईटों और सुखी-चूना सें निर्मित है, आठों दरवाजों की ऊंचाई 6 फुट तथा चौड़ाई 4 फुट है।

मकबरे के बीचो-बीच सैयद हाशिम की कब्र है तथा उसी के पास थोड़ा नीचे स्तर पर एक अन्य कब्र भी है। मकबरे के सर्वेक्षण के इस बात को बल मिलता है कि शायद इसका निर्माण कार्य बीच में रुक गया होगा। यह इमारत दृढ़ता का अहसास कराती है।

पुरा स्मारक

(३) सैयद अबुल मुजफ्फर खाँ का मकबरा

सैयद अबुल मुजफ्फ गांव बिहारी के रहने वाले थे। 1619 ई0 में उनको राजकुमार खुर्रम के साथ दक्षिण में भेजा गया। वहां पर उन्होंने बहुत वीरता तथा स्वामिभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत किया, जिससे कि राजकुमार खुर्रम बहुत प्रभावित हुआ[34]। उसके पश्चात् वह विभिन्न सैनिक अभियानों में सदैव खुर्रम के साथ रहे जब राजकुमार खुर्रम सम्राट बना तब उसने अबुल मुजफ्फर को 4000 जात तथा 3000 सवार का मनसब दिया साथ ही उनको झंड़ा, नगाड़ा तथा ग्वालियर की सूबेदारी भी दी। उन्होंने जुझार सिंह बुन्देला तथा खाने जहां लोदी के विरुद्ध अनेक अभियानों में भाग लिया 1628 ई0

में खाँने जहाँ लोदी आंशकित होकर राजधानी से भाग गया। अबुल मुजफ्फर को ख्वाजा हुसैन तुरबती के साथ उनका पीछा करने का आदेश दिया गया। अबुल मुजफ्फर ने अपने सेनापति की प्रतीक्षा न करके त्वरित गति के साथ उनका पीछा किया तथा धोलपुर के निकट चम्बल नदी के किनारे दोनों के साथ भयंकर युद्ध हुआ उनका पोता मौहम्मद शफी और 19 अन्य बाराह के सैयद मारे गये[35] तथा 50 अन्य यहयोगी घायल हुए। जब सम्राट को इसका ज्ञान हुआ तो सम्राट ने अबुल मुजफ्फर का मनसब 1000 सवार और बढ़ा दिया। जब खाने जहाँ लोदी से इलाहाबाद के निकट पुनः टकराव हुआ तब इस युद्ध में खांने जहाँ लोदी मारा गया[36] इसमें अबुल मुजफ्फर के भान्जे सैयद माखन तथा 27 अन्य सहयोगी शहीद हुए। जब वह दरबार में वापस आये तब उनका मनसब 5000 जात तथा 5000 सावर कर दिया गया। 1633 ई0 में उन्होंने परेन्दा घेरे में भाग लिया। 1635 ई0 जुझार सिंह बुन्देला तथा 1636 ई0 में आदिल शाह बीजापुरी के खिलाफ अभियान में भाग लिया। जब सम्राट ने राजधानी जाने का निर्णय तथा दक्षिण के चारों सूबों की मिम्मेदारी राजकुमार पर छोड़ी गयी तो अबुल मुजफ्फर को राजकुमार की सेवा में वहीं नियुक्त किया गया था। 1641 ई0 में उनका मनसब बढ़ा 6000 जात तथा 6000 सवार कर दिया। उन्होंने जगत सिंह के विद्रोह को दबाने में अत्यधिक वीरता का परिचय दिया। उनकों राजकुमार दाराशिकोह के साथ फारस के शासक सफी के विरूद्ध अभियान के लिये नियुक्त किया। 1643 ई0 में उनकों अपनी जागीर ग्वालियर जाने की अनुमति प्रदान की गयी। 1644 ई0 जब शाहजहाँ अजमेर गया तब अबुल मुजफ्फर को आगरा का कार्यभार सौंपा गया[37]। अगले वर्ष 1645 ई0 में उन पर फालिज का असर हो गया। तथा दो महीने तक बीमार रहने के पश्चात उनकी मृत्यु हो गयी सैयउ अबुल मुजफ्फर खाँ के तीन पुत्र थे जिनक नाम सैयद मंसूर, सैयद शेर जमान तथा सैयद मनुव्वर थे।

इनका मकबरा जानसठ तहसील के अन्तर्गत ग्राम मंसूरपुर के निकट जंगल में है। मुजफ्फरनगर-जानसठ मार्ग पर स्थित ग्राम सिखैडा से होकर यहाँ पहुंचा जा सकता है। यह दूरी लगभग 17 किमी है। यह भूतल से लगभग 4 फुट 7 इंच ऊंचे विशाल अष्टकोणीय चबूतरे के बीचो-बीच स्थिात है। चबूतरे के निर्माण में लखौरी ईटों के साज-साथ लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है। चबूतरे के किनारों वाली दीवारों पर लाल बलुआ पत्थर के उत्कीर्णित स्तम्भों एवं जालीनुमा कटावदार आकृतियुक्त प्रस्तर फलको का प्रयोग हुआ है। जिनके ऊपर चबूतरे की रेलिंग बनायी गयी स्पष्ट होती है। चबूतरे की आठों भुजाओं की माप क्रमशः निम्न प्रकार है -

चबुतरे की सीढ़ियों वाली भुजा और उसे टीक पीछे की भुजाएं 49 फुट हैं।

सीढ़ियों वाली भुजाके दायीं व बायीं ओर वाली सटी हुई भुजाएं 36 फुट हैं।

इन भुजाओं से सटी हुई दोनों भुजाओं की माप 35 फुट है।

उक्त से संलग्न भुजाओं की माप 36 फुट है।

चबूतरे से 31 फुट ऊँचाई पर अष्टोणीय आधार पर एक विशाल गुम्बद के अवशेष है। ऊपर की गुम्बद टूट गयी है। यद्यपि गुम्बद का पश्चिमी भाग अभी भी शेष है। इस अवशेष की ऊंचाई 15 फुट हैं इस प्रकार चबूतरे से ऊपर गुम्बद के भाग तक की कुल ऊंचाई 46 फुट अभी भी विद्यमान है।

मकबरे के अन्दर आल्हें हैं जिनमें ज्यामितीय अंकन विद्यमान है। यह अंकन प्लास्टर एवं रंग दोनों माध्यमों से सम्पन्न किया गया है। कुछ में केवल प्लास्टर को आधार बनाकर बिना रंग के ज्यामितीय अंकन है तो कुछ में दोनों का प्रयोग है। चारों ओर बने चारों दरवाजों में लाल बलुआ पत्थर की चौखटें मौजूद हैं। जिनसे होकर अन्दर जाने पर चारों रगीन ज्यामितीय अलंकरणों पर सहसा ही दृष्टि रूक जाती है। मकबरे के बीचों बीच खांने जहां की कब्र है। उनके दोनों ओर दो कम ऊंची कब्रें हैं। मकबरे के मुख्य द्वार के दोनों ओरबाजू में दो जीने (सीढ़ियाँ) ऊपर की ओर गये हैं। इनकी दीवारों पर कौड़ियों का प्लास्टर विद्यमान है। छत पर गुम्बद के विशाल खण्ड टूटे पड़े हैं। इस मकबरे के विषय में स्थानीय जनता में यह अनुश्रुति चली आ रही है कि जिस कारीगर ने ताजमहल बनाया था उसी ने इस मकबरे को भी बनाया था[38]।

यह भी उल्लेखनीय है कि खाने जहाँ का पैतृक गांव बिहारी था। वहाँ भी एक मस्जिद है जो कि मकबरे के कारीगर के हाथों द्वारा बनायी गयी बतायी जाती है। यह ज्ञात हुआ है कि खाने जहाँ ने अपने जीवन काल में ही यह मकबरा बनवाया था जहाँ मृत्योपरान्त उन्हें दफन किया गया[39]।

पुरा स्मारक

(४) सैयद फिरोज खाँ का महल (वेहलना)

सैयद इखतेसास खां अर्थात् सैयद फिरो जंग, सैयद मुजफ्फर खाँ के भतीजे तथा दामाद थे। सैयद मुजफ्फर खां के समय में ही फिरोज जंग को 1000 जात तथा 400 सवार का मनसबा प्राप्त था। 1645 ई0 में इनका मनसब बढ़ाकर 1500 जात तथा 600 सवार का हो गया था। 1646 ई0 में फिरोज जंग का मनसब 2000 जात, 1000 सवार का था। 1648 ई0 इनकों खाँ की उपाधि दी गई तथा राजकुमार औरंगजेब के साथ कन्धार के अभियान पर भेजा और वहांसे लौटने के पश्चात् उन्हें ''खिल्लत'' तथा एक घोडा दिया गया, जिस पर चांदी की काठी थी। 1651 ई0 में फिरोज खाँ पुनः राजकुमार औरंगजेब के साथ कन्धार अभियान पर गये[40]। 1655 ई0 में फिरोज खां को इरीज भण्डार तथा शहजादपुर का फौजदार नियुक्त किया गया। 1659 ई0 में फिरोज खां को सैयद इखतेसास खां की उपाधि दी गई। वह लम्बे समय तक आसाम में गोहाटी के थानेदार रहे। 1667 ई0 में आसामियों ने सैयद फिरोज खाँ पर आक्रमण कियां, परन्तु ठीक समय पर मुगल सेना की सहायता प्राप्त न होने

के कारण सैयद फिरोज खां 1667 ई0 मे मारे गये[41]। वह मृत्यु के समय 2500 जात और 1500 सवार के मनसबदार थे[42]। फिरोज खां के दो पुत्र पहाड़ खां तथा सैयद हसन थे। सैयद फिरोज खां ने वेहलना नामक गांव में महल बनवाना आरम्भ किया था जिसकों उनके पुत्र सैयद हसन ने पूरा कराया था[43]।

यह वेहलना गांव मुजफ्फनगर की सदर तहसील में पड़ता है जो कि जिला मुख्यालय से लगभग 7 किमी की दूरी पर स्थित है। यद्यपि इस दूरी में कई फैक्ट्रिया बन गयी हैं।

महल का मुख्य द्वार अत्यधिक विशाल है। यह बड़ा सुन्दर लगता है। मुख्य प्रवेश द्वार की फर्श से बुर्जी तक की ऊंचाई 39 फुट है। तथा चौड़ाई 80 फुट है। प्रवेश द्वार की ऊंचाई 18 फुट तथा चौड़ाई 11 फुट है।

दरवाजे पर लकड़ी के मजबूत किवाड़ चढ़े हैं, यद्यपि उनमें समकालीन सुरक्षा उपाय के रूप में प्रचलित कीलों का अभाव है। दरवाजे के ऊपर दूसरी मंजिल पर आमने सामने दो बड़े कमरे है जिनमें से प्रत्येक में 2121 आल्हें (ताख) हैं। इनके फर्श में लाल पत्थर का प्रयोग हुआ है। इसकी छतों में साल की लकड़ी की कडियां प्रयुक्त की गई है। महल के मुख्य द्वार की वास्तु ऐसी थी चौथी मंजिल पर खड़े हुए व्यक्ति को भी अन्दर चलते फिरते लोग दिखायी नहीं देते थे[44]। मुख्य द्वार से महल की ओर जाने पर बायीं ओर आधा दीवान खाना आज भी ठीक अवस्था में है। महल का कुल क्षेत्रफल लगभग 50 बीघा है जो चारों ओर से मजबूत चाहरदीवारी से युक्त है। महल की छतरी दीवार के दोनों कोनों पर एक-एक कुंआ बना है। महल के चारों कोनों पर चार बुर्जियां थी, सुन्दरता के अतिरिक्त जिनका प्रयोग सुरक्षात्मक रूप में भी थी। कुओं से दीवारों के ऊपर बनी नालियों से होकर जल आपूर्ति व्यवस्था का प्रबन्ध रखा गया थ। यह दरवाजा दृढ़ता, सुन्दरता एवं समानुपातिता का मुगलकालीन वास्तु नमूना प्रस्तुत करता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि मुगल शासकों के निकट रहने के कारण ''बारहा सैयदों'' पर इनकी कलात्मक अभिरूचियों का भी प्रभाव पड़ा होगा। इन इमारतों को देखन से यह स्पष्ट होता है कि 'बारह सैयद'' मुगल शिलपकारों से प्रेरित रहे होंगे। मुगलकालीन भवन निर्माण कला की विशेषतायें इन भवनोंमं भी पाई जाती है। जिला मुजफ्फरनगर में ''बाहर सैयदों'' द्वारा बनवाई गयी ऐतिहासिक इमारतें सहसा ही मुगल वास्तुकला की याद दिलाती है। परन्तु उचित संरक्षण क अभाव में अब ये इमारतें शनैः शनैः खण्डितः होती जा रही है। उपर्युक्त में से केवल मुझेड़ा स्थित सैयद मूहमूद का मकबरा ही आर्कियॉलोजिकल सर्वे आफ इण्डिया (A.S.I.) के संरक्षण में है। हाशिमपुर स्थित सैयद हाशिम का मकबरा वक्फ बोर्ड के अधीन है। इस मकबरे के संरक्षण के लिये लगभग 55 बीघा जमीन आवंटित है। इसी प्रकार सैयद अबुल मुजफ्फर खां का मकबरा भी वक्फ बोर्ड के अधीन है, परन्तु यह मकबरा संरक्षण के अभाव में नष्ट होता जा रहा है। 1997 ई0 तक इस मकबरे के ऊपर की गुम्बद देखी जासकती थी, उसी वर्ष वर्षा ऋतु में गुम्बद टूट गई थी। जून 2006 ई0 तक इस टूटी हुई गुम्बद के

अवशेष मकबरे की छत पर ही पडे थे। परन्तु धीरे-धीरे गुम्बद के अवशेष (मलबा) छत से लुप्त होते जा रहे है। बेहलना स्थित विशाल दरवाजा ''बारहा सैयदों'' द्वारा बनाई गई इमारतों में सुन्दरता की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण है। बेहलना स्थित महल अब मौहल्ला के नाम से जाना जाता है तथा इसमें बहुत सारे परिवार रहते है। यह महल (दरवाजा युक्त) न तो आर्कियॉजोजिकल सर्व आफ इण्डिया (A.S.I.) के संरक्षण में है और न ही वक्फ बोर्ड के सरंक्षण में है। वर्तमान में सैयद फिरोज खाँ के वंशज ही 'दीवान खाना में रहते हैं। वे अपनी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी न होने के कारण इस ऐतिहासिक दरवाजे को संरक्षित करवाने में असमर्थ हैं।

संरक्षण हेतु सुझाव:

इस ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण के लिए यह आवश्यक है कि निम्नलिखित तीन स्तरों पर प्रभावी क्रियान्वयन कराया जाये –

1. स्थानीय जनता में विभिन्न आयु वर्ग के स्त्रियों और पुरुषों में संरक्षण हेतु ग्राम स्तर पर चेतना उत्पन्न की जये।

2. स्थानीय शिक्षण संस्थाओं में ''जागृति शिविर'' चलाये जाने वाले प्रभावी सिद्ध होंगे।

3. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण एवं पुरातत्व विभाग उत्तर प्रदेश इन स्मारकों के संरक्षण भागीदारी करे, भले ही आर्थिक कारणों से यह सहभागिता आंशिक ही हो।

4. इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के निकटथ 'पर्यटन सर्किल' से जोडना उपयुक्त एवं उद्देश्य की पूर्ति में सहायक होगा।

DISTRICT MAP

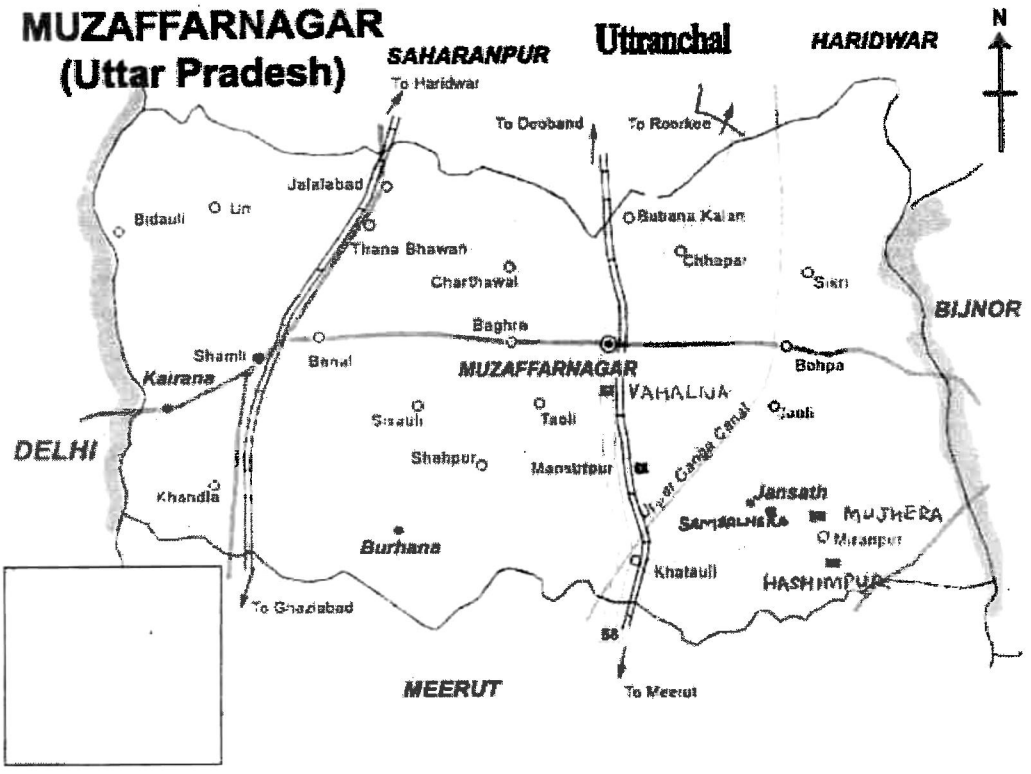

1 ■ MUJHERA

2 ■ HASHIMPUR

3 ■ MANSURPUR

4 ■ VAHALNA

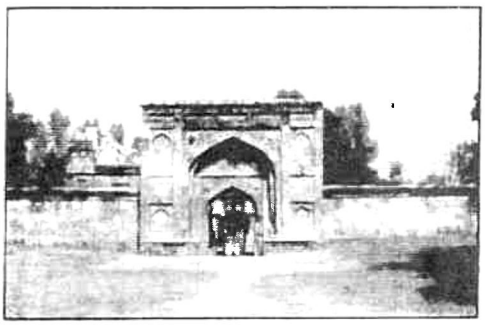

1(A). ग्राम मुझेड़ा स्थित सैयद महमूद के मक़बरे का प्रवेश द्वार

2. ग्राम हाशिमपुर स्थित सैयद हाशिम का मक़बरा

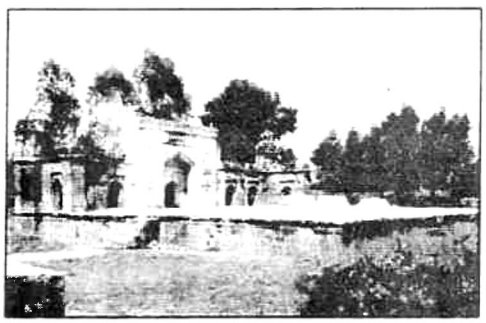

1(B). सैयद महमूद का मक़बरा

3. ग्राम मंसूरपुर स्थित सैयद मुज़फ़्फ़र खाँ का मक़बरा

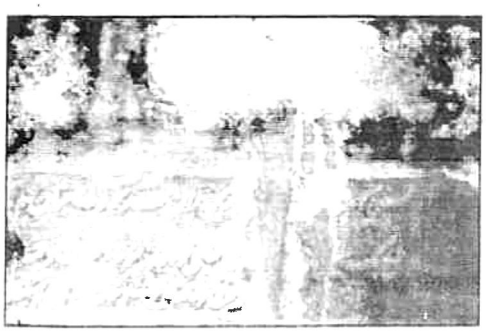

1(C). सैयद महमूद के मक़बरे पर अरबी अभिलेख

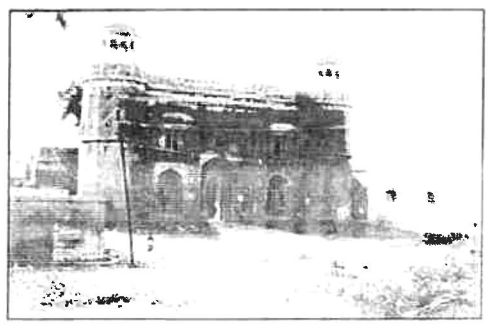

3. ग्राम वेहलना स्थित 'वेहलना दरवाज़ा' (इसका निर्माण सैयद फिरोज़ खाँ तथा उनके पुत्र सैयद हसन द्वारा कराया गया)

ज़िला मुज़फ्फरनगर में बारहा के सैयदों द्वारा बनवाई गईं अन्य प्रमुख ऐतिहासिक इमारतें

ग्राम माखनपुर अर्थात् मुझेड़ा स्थित
सैयद माखन का मक़बरा

ग्राम कैथोड़ा स्थित
सैयद लतीफ शाह का मक़बरा

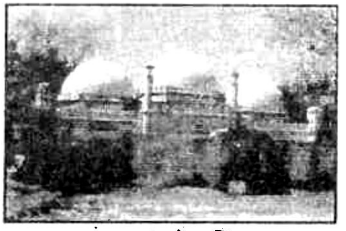

ग्राम सम्मलहेड़ा स्थित
जूड़ा वाली मस्जिद

क़स्बा जानसठ स्थित रंग महल

क़स्बा जानसठ स्थित रंग महल मस्जिद

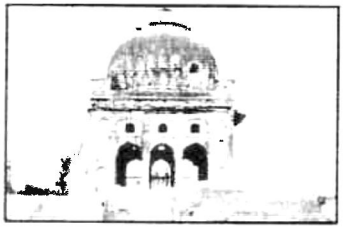

क़स्बा जानसठ स्थित
सैयद सैफुद्दीन का मक़बरा

ग्राम कैथोड़ा स्थित
सैयद दिलावर का मक़बरा

ग्राम कैथोड़ा स्थित
बड़ा दरवाजा

ग्राम बिहारी स्थित
बीबी मोटी का मक़बरा

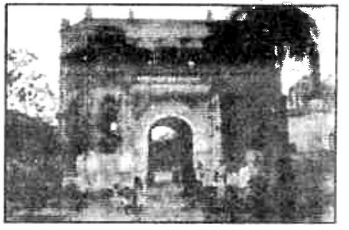

ग्राम सम्मलहेड़ा स्थित
सैयद तालिब अली की हवेली

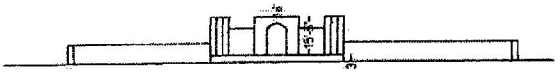

ELEVATION A-A

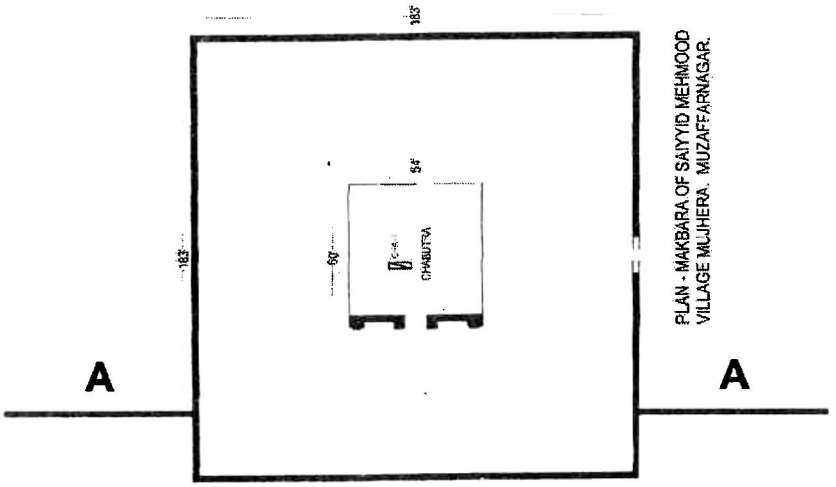

PLAN - MAKBARA OF SAIYYID MEHMOOD
VILLAGE MUJHERA. MUZAFFARNAGAR.

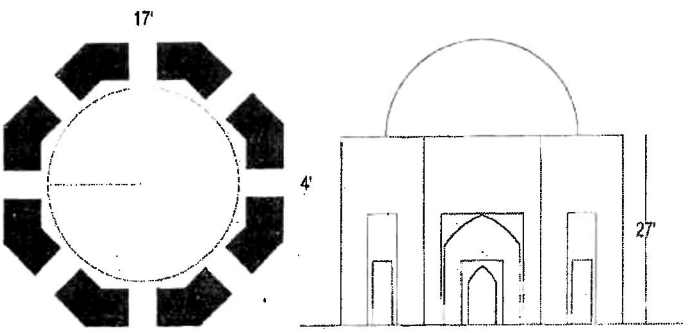

MAKBARA OF SAIYYID HASHIM
VILLAGE HASHIMPUR. MUZAFFARNAGAR.

ELEVETION

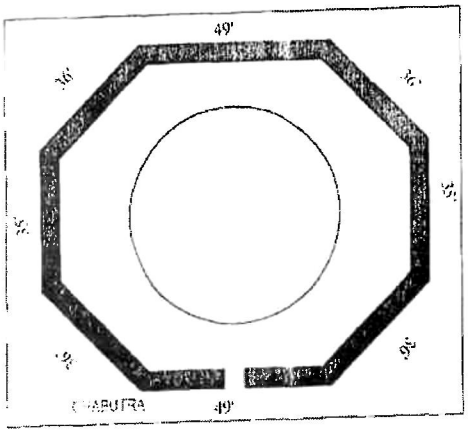

MAKBARA OF SAIYYID MUZAFFAKHAN

VILLAGE MANSURPUR MUZAFFARNAGAR

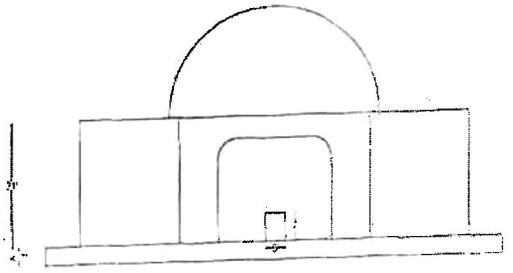

ELVETION

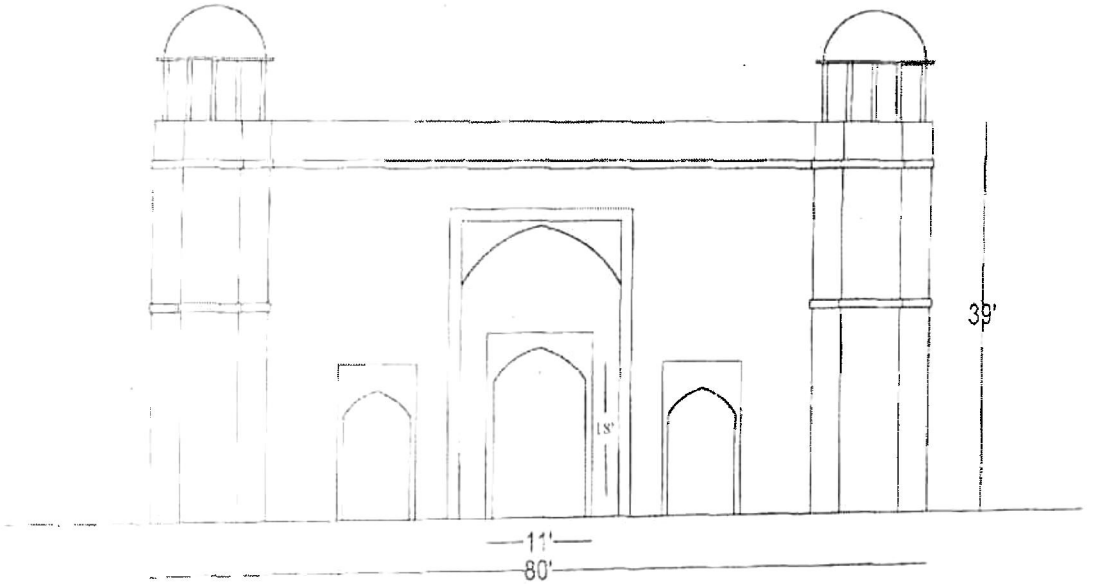

PALACE OF SAIYYID FIROZ JUNG

VILLAGE VEHALNA MUZAFFARNAGAR

सन्दर्भ

1. नेविल एच0आर0: डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स आफ दि यूनाइटेड प्रोविन्सेज, वाल्युम-III, मुजफ्फरनगर, गर्वर्नमेन्ट प्रेस, इलाहाबाद, 1903, पृ0 1
2. वही, पृ0 1
3. वही, पृ0 295
4. वही, पृ0 125
5. मलिक, जहीरूद्दीन : दि रेन ऑफ मुहम्मदशाह पब्लिशिंग हाउस, 1977, पृ0 31-32
6. अबुल फजल : आईने अकबरी (ब्लाखमैन - अंग्रेजी अनुवाद) कलकत्ता मदरसा, 1873, पृ0 428,
7. एटकिन्सन, एडवर्ड टी0 : स्टेटिस्वकल डिस्क्रेप्टिव एण्ड हिस्टारिकल एकाउण्ट, ऑफ नार्थ - वैस्टर्न प्रोविंसेज आफ इण्डिया, वाल्यूम - III, पार्ट-II, मुजफ्फरनगर, 1876 पृ0 590
8. अबुल फजल : आइने अकबरी, पूर्वोक्त, पृ0 429
9. वहीं, पृ0 426
10. वहीं, पृ0 426
11. बेवरिज0एच अंग्रेजी अनुवादक, प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा, रायल एशियाटिक योसायटी, वाल्यूम-II, पृ0 35
    अबुल फजल : आइने अकबरी, पूर्वोक्त, पृ0 424
12. बेवरिज0 एच, प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा, पूर्वोक्त पृ0 36
    अबुल फ़जाल : आइने अकबरी, पूर्वोक्त, पृ0 424
13. हुसैन, अफजाल : दी नोबिलीटी अन्डर अकबर एण्ड जहांगीर-ए-स्ब्डी आफ फेमिली ग्रुप्स, मनोहरलाल, 1999, पृ0 105
14. अबुल फजल : अकबरनामा (एच बैवरिज, अंग्रेजी अनुवाद), हिन्दुस्तान पब्लिशर एंड डिस्ट्रीब्यूटर, वाल्यूम - III, पृ0 72
15. बेवरिज0 एच0, प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा, पूर्वोक्त पृ0 36
16. हुसैन अफजाल, पूर्वोक्त, पृ0 105
17. बेवरिज एच0, प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा पूर्वोक्त पृ0 36
18. अबुल फजल आईने अकबरी पूर्वोक्त, पृ0 424
19. हुसैन अफजाल, पूर्वोक्त, पृ0 106

20. अबुल फज़ल : अकबरनामा, पूर्वोक्त, वाल्यूम- III, पृ0 16
21. बेवरिज0 एच0 प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा, पूर्वोक्त पृ0 36
22. अबुल फजल : अकबरनामा, पूर्वोक्त, वाल्यूमा - III, पृ0 81
23. बेवरिज0 एच0, प्रसाद, बेनी: मासिर उल उमरा, पूर्वोक्त पृ0 37
अबुल फजल : अकबरनामा, पूर्वोक्त वाल्यूम - III, पृ0 108
24. बेवरिज0 एच0, प्रसाद बनी : मासिर उल उमरा, पूर्वोक्त पृ0 37
25. वेविल एच0 आर0 पूर्वोक्त, पृ0 171
26. हुसैन, अफजाल, पूर्वोक्त, पृ0 106
27. वही, पृ0 107
28. अबुल फजल : अकबरनामा, वाल्यूम - III, पूर्वोक्त, पृ0 225
29. वही, पृ0 237
30. हुसैन, अफजाल, पूर्वोकत पृ0 108
31. वही, पृ0 108
32. बेवरिज0 एच0, प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा, पूर्वोक्त पृ0 495
अबुल फज अकबरनामा, वाल्यूम- III, पूर्वोक्त पृ0 634
33. अबुल फजल : अकबरनामा, वाल्यूम- III, पूर्वोक्त, पृ0 634
34. बेवरिज0 एच0, प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा वाल्यूम -I, पूर्वोक्त पृ0 792
35. सक्सेना, बनारसी प्रसाद, : मुगल सम्राट शाहजहाँ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ एकादमी, जयपुर, 1974, पृ0 71
36. बेवरिज0 एव0 प्रसाद, बेनी : मासिर उल उमरा, वाल्यूम-I, पूर्वोक्त पृ0 793
37. वही, पृ0 795
38. साक्षात्कार, दिनांक 30.09.2006 श्री रियाज अकबर पुत्र स्व0 मकबूल अली जैदी, आयु 67 वर्ष, ग्राम भटोड़ा, तहसील जानसठ, जिला मुजफ्फरनगर।
39. साक्षात्कार, दिनांक 30.09.2006 श्री शम्मू जैदी पुत्र श्री मकसूद अली जैदी, आयु 45 वर्ष, ग्राम भटौड़ा तहसील जानसठ, जिला मुजफ्फरनगर।